# मंथन से निकलेगा अमृत

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

शास्त्रों में समुद्र मंथन का गायन है। कहा जाता है कि जब समुद्र मंथन हो रहा था तो उसमें एक वासुकि नाग को रस्सी बनाया गया। मंदराचल पर्वत को बीच में रखा गया। जिसके चारों तरफ वासुकि नाग को लिपटा हुआ दिखाते हैं। एक तरफ असुर और दूसरी तरफ देवता। देवताओं को मूंछ की तरफ दिखाया और असुरों को सिर की तरफ दिखाया। और समुद्र मंथन में कहते हैं कि चौदह रत्न निकले, ये कहानी है। लेकिन क्या ऐसा संभव हो सकता है? आपके हिसाब से आज का विज्ञान का युग है।

समुद्र इतना गहरा होता है कोई भी पर्वत, कितने सारे पर्वत उसके अन्दर समा जायें। और पर्वत को घुमाना आसान काम है क्या! तो कोई भी किस्सा और कहानी को जब पिरोया जाता है तो उसके पीछे कोई न कोई मर्म होता है। और उस मर्म को जानने से ही हम उस बात के साथ अपने आपको जोड़ सकते हैं। ये समुद्र मंथन आपके जीवन की कहानी है। जिसमें एक व्यक्ति की जो दिनचर्या है उसको बड़े ध्यान से देखें तो उसमें पायेंगे कि उसमें देवता भी हैं और असुर पक्ष भी है। कहा जाता है कि देवतायें पूंछ की तरफ हैं और असुरों को सिर की तरफ दिखाया। सिर का मतलब जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भरा हुआ है। और पूंछ की तरफ देवताओं को दिखाया कि थोड़ी बहुत पूंछ, पूंछ का मतलब पूछना थोड़े बहुत गुण, जो हम सबके अन्दर बचे हैं उसी आधार से ही तो हमारा परिवार चल रहा है। और जब देखो घर में किसी बात पर कोई मनन-चिंतन होता है, कोई डिस्कशन होता है तो कोई बात निकल आती सामने कि नहीं अगर ये बात ऐसे की जाये तो बहुत अच्छा है। लेकिन उस समय दोनों चीज़ें लड़ रही होती हैं, एक असुर पक्ष भी लड़ रहा होता है, एक देवता पक्ष भी अन्दर ही अन्दर द्वंद्व में जी रहा होता है।

लेकिन मंदराचल पर्वत का मतलब ही यही है कि मन के अन्दर अचल स्थिति। मन के अन्दर रहते हुए हमारी स्थिति इतनी अचल हो, इतनी अडोल हो कि हम आराम से कोई चीज़ का सॉल्यूशन निकाल पायें, समाधान निकाल पायें। तो उसमें दिखाते हैं चौदह रत्न कौन-कौन से निकले हैं- पहला निकला श्री माना श्रेष्ठ बनना। दूसरा, मणि, रम्भा, वारुणी, अमिय, शंख, गजराज, कल्पतरु , शशि, धेनु, धन, धन्वंतरि, विष, बाज। ये चौदह रत्न हैं। अब इन चौदह रत्नों का हमारी दिनचर्या में क्या गायन है। परमात्मा हमको रोज़ श्रेष्ठ विचार देते हैं। श्रेष्ठ थॉट देते हैं। जिससे हम श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण बनते हैं। मणि का मतलब आत्मा बनाने का अभ्यास कराते हैं। रम्भा का मतलब परी बनाते हैं कि अगर आप दिन-रात अभ्यास करें तो आप फरिश्ता स्थिति को प्राप्त करेंगे। वारुणी का मतलब जल की तरह ट्रांसपेरेन्ट बनाते हैं, पारदर्शी बनाते हैं। अमिय, अमृत के समान हमको ज्ञान अमृत पिला कर अमर बनाते हैं और दूसरों को भी वही बातें सिखाकर हमारे जीवन को अमर बनाने की बात करते हैं। शंख का मतलब निरंतर परमात्मा की बातें करने से हमारा मुख भी पवित्र होगा, और हमारा जीवन भी सुखमय होगा। गजराज,एरावत हाथी का बहुत वर्णन है कि एरावत हाथी इन्द्र का हाथी है जो सदा मस्त रहता है, उड़ता रहता है, तो ऐसे ही हम इस जीवन में होंगे, चारों तरफ परिस्थितियां होंगी फिर भी हमको उड़ना है। एरावत हाथी का इसलिए उदाहरण दिया जाता है।

फिर कल्पतरु, पूरे वृक्ष की नॉलेज। परमात्मा जो हमको देते हैं ताकि हमारे अन्दर ड्रामा की हरेक बात को लेकर कभी कोई संशय न आये। फिर आया शशि, शशि का मतलब चन्द्रमा की तरह शीतलता। चन्द्रमा की तरह शीतल बनाते हैं। फिर धेनु,कामधेनु, कामधेनु की बात की जाती है माना सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करना। हम सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करने का मतलब जो भी जिस परिस्थिति में है उसे उससे बाहर निकालना। धन, ज्ञान धन दिया। ज्ञान धन से स्थूल धन कहा जाता है जितना ज्ञान उतना स्थूल धन। फिर धन्वंतरि, परमात्मा ने हमको चिकित्सक बनाया। सबसे बड़ा चिकित्सक का मतलब हम खुद ही खुद के चिकित्सक बनें। आपसे ज़्यादा आपको कौन जान सकता है! शारीरिक अवस्था, फिर मानसिक अवस्था, फिर विष जितने भी बुराई, विकार लोगों के हैं, उनको छुड़ाने का काम करना। इसलिए कहा जाता है विष बाज। विष का मतलब होता है निलकंठ। नीलकंठ का एक वर्णन है शास्त्रों में कि जब शंकर जी ने सबका विष पिया तो उसको विष बाज कहा, बाज का अर्थ है कि जो दूर से ही हर एक चीज़ को भांप ले। परिस्थितियों को भांप ले। वो बाज की कैटेगिरी है।

तो ये सारे चौदह रत्न आपके पूरे दिन की दिनचर्या को आपके सामने रखते हैं और इसी का मनन-चिंतन अगर हम रोज़ विचारों के साथ करेंगे तो सॉल्यूशन निकल कर आयेगा ही आयेगा।

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

## मन की बातें

**प्रश्न : मेरा नाम अर्शदीप है और मैं पटियाला से बिलॉन्ग करता हूँ। मैं मेरे शरीर में होने वाले दर्द से परेशान हूँ। ये दर्द कभी मेरे सीने में, कभी दिल में, कभी पेट में, और कभी गले में होता रहता है। अभी तक मैंने 2 बार एंडोस्कॉपी और 3 बार अल्ट्रासाउंड और 1 बार अपनी हार्ट बीट को भी चेक करवा लिया है। मगर टेस्ट में कुछ भी नहीं आता। मैं इस बीमारी से करीब डेढ साल से परेशान हूँ। मगर दर्द है कि बंद ही नहीं होता। सभी डॉक्टर्स कह देते हैं कि कोई टेंशन है। मगर मैं जानता हूँ कि मुझे कोई भी टेंशन नहीं है। इसको लेकर मैंने एक साइकेट्रिक को भी दिखाया था। लेकिन उसकी मेडिसिन लेने के बाद भी यही कुछ चलता रहता है। मैं क्या करूँ?**

**उत्तर :** समस्या बड़ी तब हो जाती है जब डॉक्टर्स उसको समझ नहीं पाते हैं। और ऐसे बहुत सारे केसेज में देखा जाता है कि इसके पीछे कोई दूसरे रहस्य होते हैं। कुछ लोग विश्वास करते हैं और कुछ नहीं करते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग मंत्र करके चीज़ खिला-पिला देते हैं। ये परेशान रहे लड़का, अच्छा न पढ़ सके। सबकुछ बिगड़ जाये इनका। मैंने कई केस ऐसे डील किए हैं। इसमें 1-2 चीज़ें बहुत कारगर सिद्ध हुई हैं, वो आपको भी बता देता हूँ। निश्चित रूप से आप ठीक हो जाएंगे। क्योंकि ये मूविंग पेन हो गया ना। तो ये निश्चित रूप से कोई निगेटिव एनर्जी का काम है। तो आपको एक तो चार्ज करके पानी पीना है। जब भी आप पानी पिएं तो पानी को दृष्टि देकर सात बार संकल्प करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तो पानी चार्ज हो गया। अब ये पानी अच्छी मेडिसिन बन गया। अब ये जो चार्ज वॉटर है ये किसी भी निगेटिव इफेक्ट को समाप्त करने में बहुत समर्थ रहता है। मुझे विश्वास है कि दो-तीन दिन में ही आपको बहुत फायदा हो जायेगा। और कम से कम पाँच बार आप ऐसा पानी पी लें और सवेरे उठते ही और रात को सोते समय 21-21 बार संकल्प करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मेरा ये दर्द समाप्त हो गया है। मैं सम्पूर्ण हेल्दी हूँ। ये सब्कॉन्शियस माइंड को भेजें। विशेषकर सोने से पहले। उठते ही मैंने इसलिए कहा क्योंकि ये दूसरे तरह का दर्द है। उठते ही करेंगे तो आपके बॉडी में बहुत अच्छे वायब्रेशन्स जायेंगे। और निगेटिव एनर्जी अन्दर काम कर रही है उसको नष्ट करेंगे। एक तीसरा भी अभ्यास है, आप राजयोग का अभ्यास अवश्य करते होंगे, मैं आत्मा भृकुटी में हूँ, मैं बहुत शक्तिशाली हूँ, मैं भगवान का बच्चा, मुझसे शक्तियों की लाल किरणें फैल रही हैं। और वो पहले ब्रेन में जा रही है, फिर पूरे देह में फैल रही है। ऐसा फील करेंगे कि मैं आत्मा ब्रेन के बीच में हूँ। वायब्रेशन्स लाल शक्तियों के फैल रहे हैं। ब्रेन में भर रहे हैं और फिर पूरी देह में फैल रहे हैं। और उस दर्द को, जो भी निगेटिव इफेक्ट है उसको नष्ट कर रहे हैं। एक-एक मिनट करेंगे पाँच-सात बार दिन में। तो मुझे पूर्ण विश्वास है, जैसा कि आज तक का हमारा अनुभव है ऐसे केसेज में जोकि बहुत जल्दी, तीन-चार दिन में ही ठीक हो जाते हैं।

**प्रश्न : सात-आठ महीने से मेरा जो बेटा है वो फोन नहीं करता, बात नहीं करता। वो कहाँ है ये भी मुझे पता नहीं है। क्या उसके लिए कुछ किया जा सकता है?**

**उत्तर :** निश्चित रूप से माँ का दिल तो बड़ा हर्ट होता है। माँ को तो बच्चे ही सबकुछ हैं। बच्चे अगर मिले ही नहीं, देखना तो दूर रहा वो बात भी नहीं करता। और इससे बड़ी बात कि ये भी पता नहीं कि वो कहाँ पर है। तो आपके मन में एक अनिश्चितता रहती है। कहाँ चला गया, कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया। कहीं कुछ हो न जाये, हमें कुछ पता ही नहीं है तो हम उसके लिए क्या करेंगे। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के संकल्प और भय पैदा होता है। और बच्चे हैं कि कहीं पर भी लग जाते हैं। लेकिन इनके समाधान हैं। मैंने पहले भी कहा कि पाँच ऐसे केस जो अच्छे सफल हो चुके हैं, जो बच्चे पाँच-पाँच साल से गुम गये थे और घर से लड़ाई-झगड़ा करके चले गए थे। ना फोन करते थे, ना बताया था कि कहाँ हैं। तो आपको पहला काम करना है, 108 बार एक टाइम फिक्स करके लिखें या याद करें जो भी आपको सहज हो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और फिर अपने बच्चे को आत्मा देखकर कि तुम एक बहुत अच्छी आत्मा हो, उसका आह्वान करें कि हम तुम्हें बहुत याद कर रहे हैं आ जाओ। ये काम रोज़ शाम के टाइम कर सकते हैं, सवेरे के टाइम कर सकते हैं। दूसरी एक चीज़ पाँच बजे करनी है, उसे आत्मा देखकर पाँच मिनट तो गुड वायब्रेशन्स देने हैं। इसकी विधि हम हमेशा बताते रहते हैं मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मुझसे शक्तियों की किरणें निकलकर उसे जा रही हैं। उसका चेहरा देखेंगे और मस्तक में आत्मा कि इसे जा रही हैं। पाँच-सात बार रिपीट कर लें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। शक्तियों की किरणें उसे जा रही हैं फिर मन से उससे बात करें कि तुम तो बहुत अच्छे हो, तुम तो हमारे नैनों के नूर हो, अरे तुम हमारे बहुत अच्छे लाल हो। हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं। ठीक है अगर हमने तुमसे कुछ कह दिया, हमसे कुछ गलती हुई तो हम क्षमा चाहते हैं। घर वापिस आ जाओ। फोन तो करो। रोज़ एक ही समय पर करेंगे। ये करेंगे तो उससे रहा नहीं जायेगा फिर। जैसे ही वो उठेगा तो उसका सब्कॉन्शियस माइंड उसे रिसीव कर लेगा। पेरेन्ट्स को हम सजेस्ट करते हैं कि एक तो अपने बच्चों को प्यार की दृष्टि दो रोज़। वहीं से ही दूर से ही, भले आप अपने कमरे से ही दे दो। ये बहुत अच्छी आत्मायें हैं। ये सचमुच बहुत चरित्रवान हैं। ये बड़े आज्ञाकारी हैं, बहुत अच्छे हैं। ऐसी फीलिंग्स दो, ऐसे वायब्रेशन्स दो। और वायब्रेशन्स जायेंगे इन संकल्पों से। हम ये संकल्प करेंगे तो ये संकल्प उनको जाने लगेंगे। दूसरी एक जो बहुत इम्पोर्टेंट चीज़ है कि हम उनको आत्मा देखकर स्वयं को स्वमान में स्थित करके कुछ अच्छे प्रेरक बोल बोलेंगे तो वो उसे स्वीकार करेंगे, क्योंकि हमारे बोल में पॉवर रहेगी, प्रभाव रहेगा, माँ-बाप का क्या होता है नॉर्मली क्योंकि वो बड़े हैं तो उन्हें अधिकार रहता है तो अधिकार से बच्चों को डांटते हैं। और उन्हें पता है कि बच्चे कुछ कहेंगे नहीं सुन लेंगे। लेकिन बच्चे कहीं-कहीं रिवर्स करने लगते हैं, उल्टा-सुल्टा बोलने लगते हैं। जो आत्मिक दृष्टि रखकर खुद स्वमान का अभ्यास करते हुए मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं तो विश्व कल्याणकारी हूँ। ये स्वमान याद करते हुए फिर उनको बड़े प्यार से बोलेंगे, ये आज के समय में माँ-बाप को समझ लेना चाहिए कि डॉट का हथियार नहीं आजकल चलेगा, प्यार का हथियार। प्रेरणा देने वाले बोल, उनको हर्ट करने वाले नहीं। मान लो गलत काम ही कर रहे हैं ऐसे में अगर उसे बहुत प्रेरक बात कही जाये तो बच्चे रियलाइज़ करेंगे कि वे रॉन्ग ट्रैक पर हैं। उन्हें महसूस हो कि ये गलत है, इससे तुम्हारी एकाग्रता नष्ट होगी। इससे तुम्हारी प्युरिटी नष्ट होगी, इससे तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जायेगा, ऐसी अच्छी-अच्छी बातें कहनी चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना ' पीस ऑफ माइंड' और ' अवेकनिंग' चैनल